ऊपर पर कवितात्मक रचना जे कैलनि अछि। ओहिमे बाँसुरिक स्वर एतेक आकर्षक मादक अछि जे कोनो व्यक्तिके बेसुध क दैछ। जेना विषधर स्वर एतेक आकर्षक मादक अछि जे कोनो व्यक्तिके बेसुध क दैछ। जेना विषधर साँपक विषसँ लोक बेसुध भ जाइछ। यमुनाक तट पर गोपी आ राधाक मन पर मलकी अछि मुरली जखने कृष्णक बाँसुरीक धुनक ध्वनि कान तक पहुँचैत छै त गोपी कागज रोहन स्तीलके बिसरि जाइछ। तन-मनके जेना आगाँ लैत दैत छैक। जेना कोनो ओझा-गुनीक मन्त्रसँ मुग्ध भ। बसमे भ जाइछ। तहिना राधा आ आन सब गोपीका एहेन हाल छैक। जे चिन्तप लगैत छैक जे बाँसुरीक ध्वनि, मन उचैत जाइछ है, कृष्णसँ रचा मोहित भ। मनसँ नाचए लगैत अछि।

"समाचार आ सद्विचार जे युग-युग सात्ने पचित तकर आबो निश्चय गुडतै नहि, होयत नहि ओ शोषित।"

प्रस्तुत पद्यांश कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' जी लिखित 'इतिहासी' नामक पोथीसँ संकलित जे 'कुर्कु-धर्म: जगत भाव' शीर्षकसँ लेल गेल अछि। एहि शीर्षकक अन्तर्गत कवि मानव जीवनक यथार्थ रूपक चित्रण कएल अछि। मानव जीवन प्रकृष्ट रूपक सेहो त जगतके मानवताकेँ

Scanned by TapScanner

लोक जुनि बिसरथि। किओ कहैत अछि धीरे-धीरे
सहित रहलासँ जीवन सफल हैत। कुशल छथि जनैत
कर्मक प्रधानता तहिना हरिनि-पूजा अर्पित अछि।
मानव-मनके कतेको सेहन्ता भरल छैक नक्षत्र पूरा
करबा लेल कतेको शुभ-अशुभ कार्य करैत छथि।
कुछ सामाजिक बीच धर्मक शेखी बघारैत छथि
जे छल-प्रपंचमे लागल रहैत अछि। ओहन मनसँ
श्रद्धाले भगवान शरणागत कोनाक सकैत छथि
जखन कुराचारीसँ बेड़ा पार भ जेतै तखन किओ
कोना सदाचारमे लागल रहत। सदाचार आ सद्विचार
त युग-युगसँ धर्म आ शास्त्र पोषित अछि आ
सहायक रहल। तखन कुराचारी, कोना सहजे भवसागर
पार भ जायत? कदापि नहि। संसार सागर सँ
वैह सहज रीतिसँ पार भ सकैछ जे, सदाचारी, सद्
धार्मिक होइछ। तँ जे किओ कुराचारमे लागल छथि
ओ शीघ्रहि सद्विचार, धर्मशास्त्र विहित पथगामी बनथि
नहि त एहि जीवनमे कल्याण सम्भव नहि।

क्रमशः

Sanjit Kumar

(1)

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) J.T.
मैथिली विभाग
M.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट-वन
Lecture-1

इतिहासी (सप्रसंग व्याख्या-1)

"जौं निश्चय बयो, उचाटो मन्चे आछि,
मोहिके वश करय, मन नन्चे आछि।"

प्रस्तुत पद्यांश कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' जीक अन्तिम कविता संग्रह 'इतिहासी' पोथी मे संगृहीत 'बँसुरिया डाँहि ललकै' शीर्षक कवितासँ लेल गेल अछि।

एहि पोथीक पद्यांशमे कवि कृष्णक बँसुरीक